**मुझे मुझसे प्यार हो रहा हैं**

किसी तस्वीर में नहीं, आईने मे देख शर्मा रही हूँ,

बैठे बैठे खुद के ख्यालों में मुस्कुरा रही हूँ ,

अब मुझमे, मैं मुझसे थोड़ा ज्यादा हो गयी हूँ,

मैं खुद की चाहत मे खो गयी हूँ |

कुछ अनकहा, कुछ अनसुना सा हाल हो रहा हैं,

मुझे मुझसे प्यार हो रहा हैं ||

मैं अपनी ही जुल्फों से खेल लेती हूँ,

मनचाहा तोफा भी खरीद लाती हूँ,

मैं खुद से दिन भर बातें करने लगी हूँ,

मैं खुद को थोड़ा बेहतर समझने लगी हूँ,

वो कहते हैं, मैं तनहाई में गुम हो गयी हूँ,

देखो ! मैं तनहा नहीं,

बस खुद की चाहत में खो गयी हूँ |

कुछ ज्यादा ही खुबसूरत समा हो रहा हैं,

मुझे मुझसे प्यार हो रहा हैं ||

वो चाँद सी बिंदी माथे पर लगी हैं,

आँखो में काजल, होठों पर लाली खिली हैं,

झुमको की झनझन में मन उलझ रहा हैं,

पायल की छनछन में दिल ठुमक रहा हैं ,

नज़र का टीका लगा,

मैं खुद की नजरों से खुद को बचा रही हूँ |

वो कहते हैं, मैं पागलपन की सीमा पार कर गयी हूँ,

देखो ! मैं पागल नहीं,

बस खुद की चाहत में खो गयी हूँ |

खुद के लिए ही करु श्रंगार, अब ये रोज हो रहा हैं,

मुझे मुझसे प्यार हो रहा हैं ||

अब खुद से इज़हार कर रही हूँ,

खुद के ही इक़रार का इंतजार कर रही हूँ,

मुझे मुझ-सा कोई मिलेगा नहीं,

दिल को समझा रही हूँ |

प्यार भरी मुलाकातों मे भी अपनी ही कहती और सुनती हूँ,

उन खतों पर भी जाना पहचाना पता लिखती हूँ,

मैं खुद की तारिफे,

बार बार खुद को ही पढ़ती हूँ |

वो कहते हैं, मैं नियमों को भूल रही हूँ,

देखा ! मैं भुल्लकड़ नहीं,

बस खुद की चाहत में खो गयी हूँ |

मेरे हर लाल गुलाब पर मेरा हक हो गया हैं,

अब तो तय हैं,

मुझे मुझसे प्यार हो गया हैं ||

                                                - रजनी